भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-2 /अंक -19 / जनवरी-2023

रिश्तों की डोर

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -2/अंक-19 / जनवरी -2023

प्रकाशन स्थल	संपादक	डिजाइनिंग टीम
मुम्बई	प्रीति माहेश्वरी	MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

जनवरी माह

साका कैलेण्डर 1944 | विक्रम संवत-2079 | अयान - दक्षिणायन | ऋतु - शिशिर

सोम	30 माघ शु. नवमी	02 पौष शु. एकादशी, पौष पुत्रदा एकादशी व्रत	09 माघ कृ. द्वितीया	16 माघ कृ. नवमी	23 माघ शु. द्वितीया, सुभाष चंद्र बोस जयंती
मंगल	31 माघ शु. दशमी, रोहिणी व्रत	03 पौष शु. द्वादशी	10 माघ कृ. तृतीया/चतुर्थी, तिल/ संकट चौथ व्रत	17 माघ कृ. दशमी	24 माघ शु. तृतीया
बुध		04 पौष शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	11 माघ कृ. चतुर्थी	18 माघ कृ. एकादशी, षटतिला एकादशी व्रत	25 माघ शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी
गुरू		05 पौष शु. चतुर्दशी	12 माघ कृ. पंचमी, स्वामी विवेकानन्द जयंती	19 माघ कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	26 माघ शु. पंचमी, गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी
शुक्र		06 पौष शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत	13 माघ कृ. षष्ठी	20 माघ कृ. चतुर्दशी, मासिक शिवरात्री	27 माघ शु. षष्ठी
शनि		07 माघ कृ. प्रतिपदा	14 माघ कृ. सप्तमी,लोहडी, मकर संक्रांति, पोंगल	21 माघ कृ. अमावस्या	28 माघ शु. सप्तमी
रवि	01 पौष शु. दशमी, नववर्ष अंग्रेजी कैलेण्डर	08 माघ कृ. द्वितीया	15 माघ कृ. अष्टमी, बिहु, उत्तरायण	22 माघ शु. प्रतिपदा	29 माघ शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

नव वर्ष सबके लिए शुभकारी हो

स्वागत है नए साल का, सबके लिए हितकारी हो,
समाज का विकास हो, सबके लिए शुभकारी हो।
समरसता, सद्भावना व प्रेम की अविरल धारा बहे,
अमीर व ग़रीब सबके लिए नव वर्ष मंगलकारी हो।।

मुझसे अपने रूठे हुए हैं, नव वर्ष में उनको मना लूँ,
पूर्ण हो लक्ष्य, जो तय किए, राह कुछ ऐसी बना लूँ।
मैं यह मानता हूँ, विजय मिलना न इतना आसान है,
कठिन साधना से ही सफलता के सोपान बना लूँ।।

पूर्व की भाँति ही मैं सत्पथ पर सतत चलता रहूँगा,
भयभीत करने की कोशिश करेंगे पर मैं न डरूँगा।
माना सच बोलने से मेरा बहुत ही नुकसान हुआ है,
असत्य का प्रतिकार करने से मैं न कभी न रुकूँगा।।

नव वर्ष में सृजन से चाहता हूँ कि हो नव परिवर्तन,
मेरे शब्द आवाज़ बने, जिनके हक़ का होता हनन।
समाज से उँच-नीच या अमीर ग़रीब की खाई मिटे,
इतिहास बन जाए, ऐसा हो मेरा साहित्य सृजन।।

नव वर्ष में राष्ट्र व समाज का हो सर्वांगीण विकास,
दबे कुचले हाशिए पर रहे लोगों को जगे नई आस।
सभी के चेहरे पर मुस्कराहट और ख़ुशहाली आए,
नव वर्ष में नव निर्माण हो कहीं पर न हो विनाश।।

- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी, ग्राम-कैतहा, बस्ती (उ. प्र.)

संकट चौथ व्रत

भारतीय संस्कृति जो कि धर्म पर आधारित है इसलिए धार्मिक दृष्टि से व्रत का विधान भी है। प्राय: हर मास कोई ना कोई व्रत अवश्य पड़ता है।

चौथ का व्रत वैसे तो हर मास ही आता है और कुछ लोग हर मास की चौथ का व्रत करते हैं लेकिन इन चौथ में सबसे अधिक महत्व माघ मास की शुक्ल पक्ष की चौथ का है। यह चौथ अपना एक विशेष महत्व रखती जो हर मास की चौथ नहीं रखते हैं वह भी संकट चौथ का व्रत अवश्य ही करने का प्रयास करते हैं।

संकट चौथ को कुछ अन्य नामों से भी पुकारा जाता है जैसे **संकटा चौथ, तिल चौथ, लंबोदर चतुर्थी तथा माघी चौथ** आदि।

व्रत का महत्व तथा पूजन विधि –

संकट चौथ का विशेष महत्व है, यह **व्रत अपनी संतान की लंबी आयु और सुखी जीवन की कामना लेकर किया जाता है।** अपनी संतान के सुख के लिए मां दिनभर निराहार रहकर व्रत करती है कहीं-कहीं तो यह व्रत निर्जला भी किया जाता है वृत्ति पानी भी नहीं पीता, फिर गोधूलि की बेला में प्रथम पूज्य गणपति की पूजा आरती अर्चना करता है। पूजा के समय गणेश जी के ऊपर हरी दूब अवश्य चढ़ाई जाती है। क्योंकि गणेश जी को दूब अति प्रिय है। गणेश पूजन के साथ ही साथ डूबते हुए सूर्य की पूजा भी की जाती है। पूजा करने के बाद व्रत करने वाला कथा कहता है अथवा सुनता है, कहने अथवा सुनने दोनों से ही पुण्य लाभ होता है।

पूजा में प्रसाद तिल का लगाया जाता है और उसमें काले तिल का अधिक महत्व होता है पूजा में भी तिल का प्रयोग होता है तथा प्रसाद में भी तिल का ही भोग लगता है।

इस दिन विशेष रूप से बथुआ का भी अपना महत्व है, **गणेश जी की पूजा करते समय गणेश जी 57 पिंडी बथुए** की रखी जाती हैं बथुआ उबालकर छोटी-छोटी पिंडी बना देते हैं।

रात में जब चंद्रमा निकलता है तब चंद्र दर्शन करके चंद्र भगवान की भी पूजा की जाती है और उनको भी प्रसाद लगाया जाता है तिल का ही प्रसाद लगाना होता है तथा बथुआ भी चढ़ाया जाता है

चंद्रमा की पूजा के बाद चंद्रमा को अर्घ्य दिया जाता है। हाथ में सुपारी, दूब, कुमकुम, चावल, सिक्का तथा तिल रखकर गंगाजल मिला पानी डालकर अरख देते हैं। अरख देते समय यह मंत्र बोलते हैं –

तिल तिल दियारा, तिल तिल बाती।
तिल तिल जले संकट की राती बांधे छूटे बिछड़े मिले।

पूजन करने के बाद व्रत करने वाली महिला अपना व्रत फलाहार खाकर तोड़ती है सर्वप्रथम बथुआ तथा तिलकुट खाया जाता है। कहा जाता है कि इसी दिन अर्थात संकटा चौथ के दिन गणेश जी के ऊपर बहुत बड़ा संकट आया था इसलिए इसे संकटा चौथ कहते हैं तथा माताएं इसलिए व्यक्त करती हैं कि उनके बच्चों के ऊपर संकट नहीं आए।

जो माता व्रत करें वह 1 दिन पहले सात्विक भोजन करें तथा व्रत वाले दिन प्रातः काल जल्दी स्नान कर लाल वस्त्रों को धारण करें तथा चौकी बिछाकर लाल कपड़ा बिछाकर गणपति जी को विराजित कर उनकी पूजा करें तथा अपने बच्चों की सुख कामना करें।

कथा –

राजा हरिश्चंद्र के राज्य में एक कुम्हार था वह मिट्टी के बर्तन बनाता तथा आवा लगाकर पका कर उन्हें बेचकर अपना तथा परिवार का पालन पोषण करता था।

कुछ दिनों के बाद कुम्हार जब भी आवा लगाता आवा पकता नहीं बर्तन कच्चा ही रह जाते वह बहुत परेशान हो गया तब एक तांत्रिक के पास गया, तांत्रिक को उसने अपनी समस्या बताई, तांत्रिक ने उसे एक उपाय बताया कि आप आवाज लगाते समय एक बच्चे की बलि दो और अब आ के अंदर ही बर्तनों के साथ बच्चे को अंदर बैठा कर आवा बंद कर दो। कुम्हार ने तांत्रिक के बताए अनुसार ही किया। अब आवा पक गया उसके अंदर से टन टन की आवाज आने लगी अब कुम्हार बहुत घबरा गया वह राजा के पास गया तथा पूरी घटना बताई। बच्चे की मां बच्चों को ढूंढ रही थी तथा उसने संकट चौथ का व्रत रखा था अपने बच्चे की सलामती के लिए। सबके सामने आवा खोला गया सब बड़े आश्चर्य में पड़ गए कि बालक जिंदा बैठा था और एक डंडी से बर्तनों को बजा रहा था।

गणेश जी की कृपा से उसके जीवन की रक्षा हुई तब से राजा ने डौंडी पिटवा दी सभी लोग संकट चौथ का व्रत करेंगे। कथा सुनते समय हाथ में जो तिल और चावल लिए जाते हैं वह भगवान को अर्पण कर कथा समाप्त होती है। यह कथा हम सुबह भी कह सकते हैं तथा शाम को भी कह सकते हैं किसी प्रकार का बंधन नहीं है।

।गणपति महाराज की जय।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म.प्र.)

तिल चौथ व्रत »
तिल चौथ कथा »

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।
- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **73030 21123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।
- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।
- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।
- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर करायें।

WHITE BERRY
RESIDENCY
LUXURIOUS
HOME
1 & 2 BHK
Jodi Flat (1+2 & 2+2)
NEAR POSSESSION
www.whiteberryresidency.com
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.
Google Location
QR Code:
Book Now
98705 80810, 85913 69996

www.kingswedsqueens.com
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

64. महाराज युधिष्ठिर ने कौन सा यज्ञ किया..? - जरासंध वध के पश्चात पांडवों ने चहुँ दिशाओं में यात्रा कर दिग्विजय प्राप्त की तत्पश्चात महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया।

65. भगवान श्रीकृष्ण ने राजसूय यज्ञ में कौन सा कार्य किया...? - राजसूय यज्ञ को भली प्रकार सम्पन्न करने के लिए कौरवों सहित सभी योद्धाओं को अलग-अलग जिम्मेदारी सौंपी गयी। भगवान श्रीकृष्ण ने यज्ञ में पधारे ब्राह्मणों के पांव पखारने का काम अपने जिम्मे लिया।

66. राजसूय यज्ञ में किस महापुरुष की अग्रपूजा की गयी...? - धर्मराज द्वारा पूछने पर कि कौन अग्रपूजा के योग्य है तो पितामह भीष्म ने कहा कि- "उपस्थित सज्जनों में भगवान श्रीकृष्ण अपने तेज, बल और पराक्रम से ऐसे देदीप्यमान हो रहे है, जैसे छोटे-छोटे तारों में भुवन भास्कर भगवान सूर्य" तत्पश्चात सहदेव द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की अग्रपूजा की गयी।

67. श्रीकृष्ण की अग्रपूजा से कौन अप्रसन्न व क्रोधित हो गया...?
- चेदिराज शिशुपाल श्रीकृष्ण की अग्रपूजा से चिढ़ गया था।

68. शिशुपाल कौन था...? - शिशुपाल भगवान श्रीकृष्ण की बुआ का लड़का था। पैदा होते समय उसके तीन नेत्र व चार भुजाएं थी। विचित्र शारीरिक स्थिति देख सभी भयभीत हुए और उसे त्यागने का विचार किया गया। उसी समय आकाशवाणी हुई कि यह बलशाली राजा होगा और जिसकी गोद में जाने से एक नेत्र व दो भुजाएँ लुप्त हो जायेगी उसके हाथों इसका वध होगा। भगवान श्रीकृष्ण जब अपनी बुआ से मिलने आये और उनकी गोद में शिशुपाल को रखते ही उसकी दो भुजाएं और एक नेत्र गायब हो गया।

69. शिशुपाल की माता ने क्या वर मांगा...? - उस समय शिशुपाल की माता ने कहा- "हे कृष्ण...! तुम अभयदाता हो। शिशुपाल के सभी अपराध क्षमा कर देना" तब कृष्ण ने कहा मैं आपके पुत्र के सौ अपराध क्षमा कर दूंगा।

70. शिशुपाल का वध कैसे और कहां पर हुआ...? - भगवान श्रीकृष्ण की अग्रपूजा से क्रोधित शिशुपाल यज्ञ समारोह के बीच दुर्वचन कह कर उनका अपमान करने लगा। जब अपराध रूपी अपशब्दों की संख्या सौ पूर्ण हुई उसी समय भगवान श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका वध कर दिया।

71. श्रीकृष्ण द्वैपायन कौन थे...? - महाभारत के रचयिता और पूरे घटनाक्रम के साक्षी वेद व्यास को ही श्रीकृष्ण द्वैपायन नाम से जाना जाता है। मुनि पराशर व सत्यवती की संतान, वेद व्यास पांडवों और कौरवों के पूर्वज थे। द्वैपायन द्वीप पर उन्होंने घोर तपस्या की जिससे उनका रंग काला हो गया और वेद व्यास को श्रीकृष्ण द्वैपायन नाम से भी जाना जाने लगा। सामान्य साधक एवं जिज्ञासुओं की सुविधा के लिये वेद व्यास ने एक विशाल वेद ग्रन्थ को चार भागों- **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद** में विभक्त किया।

72. शकुनि कौन था...? - गांधार राज सुबल का पुत्र व धृतराष्ट्र की पत्नी, गांधारी का भाई था। शकुनि द्यूत-क्रीडा(जुआ) में माहिर था बड़ी कुशलता के साथ कपट का सहारा लेकर वह सदैव विजयी होता था। महाभारत युद्ध में अपने पुत्र उलूक सहित, सहदेव के हाथों मारा गया।

73. पांडवों को द्यूत-क्रीड़ा (जुआ) के लिए आमंत्रित करने की सलाह दुर्योधन को किसने दी...? - उसके मामा शकुनि ने। राजसूय यज्ञ के दौरान महाराजा युधिष्ठिर का महान ऐश्वर्य व राज्य लक्ष्मी को देख दुर्योधन उनसे ईर्ष्या करने लगा। राजसूय यज्ञ के पश्चात इन्द्रप्रस्थ प्रवास के दौरान मय दानव के अद्भुत शिल्प कौशल से निर्मित महल में विचरण के दौरान कारण कभी पत्थर को पानी, तो कभी पानी को पत्थर, कभी दरवाजे को दीवार व कभी दीवार को दरवाजा समझ लेने के कारण दुर्योधन अनेक बार भ्रम का शिकार हुआ। दुर्योधन की ऊहापोह की स्थिति देख पाण्डु पुत्र हंसने लगे। ईर्ष्यावश व अपने अपमान का बदला लेने के लिये उसने द्यूत-क्रीडा (जुआ) का सहारा लिया गया।

74. धृतराष्ट्र की ओर से द्यूत-क्रीड़ा (जुआ) का निमंत्रण लेकर युधिष्ठिर के पास कौन गया...? - कौरवों के मुख्यमंत्री विदुर। मंत्री के रूप में अपना कर्तव्य निभाने से पहले विदुर ने महाराज धृतराष्ट्र को द्यूत-क्रीड़ा के दोषों व कुपरिणामों से अवगत करवाया।

75. द्यूत-क्रीडा (जुआ) कहां खेला गया...? - कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर में ।

76. कौन किस पक्ष की ओर से खेल रहा था...? - द्यूत-क्रीडा (जुआ) में पाण्डवों की ओर से महाराज युधिष्ठिर स्वयं और कौरव राजकुमार दुर्योधन की ओर से उनके मामा शकुनि जो छल-कौशल के साथ जुआ खेलने में विशेष रूप से प्रवीण था। खेल के दौरान उसने समस्त दाव जीते, और अंत में स्वयं पांडवों सहित महारानी द्रौपदी को भी जीत लिया।

77. द्यूत सभा में किसने जुआ खेलने का विरोध किया...? - कौरवों के महामंत्री विदुर ने।

78. युधिष्ठिर द्वारा दांव पर लगाने व हारने पर द्रौपदी को सभा में कौन लेकर आया...? - दुर्योधन का छोटा भाई दुशासन, रनिवास से बाल पकड़कर घसीटते हुए द्रौपदी को राज्यसभा में लेकर आया।

79. जब द्रोपदी का कौरव सभा में अपमान किया जा रहा था तो पाण्डव मौन क्यों रहे...? - द्रोपदी को दाव पर लगाने से पहले युधिष्ठिर अपने चारों भाइयों सहित स्वयं को दाव पर लगा कर, हार चुका था। इस कारण पांडव उस समय दुर्योधन के दास थे।

80. किस कौरव ने द्रौपदी का अपमान करने का विरोध किया...? - दुर्योधन के भाई विकर्ण ने, महारथी होने के साथ-साथ विकर्ण न्यायप्रिय भी था। महाभारत युद्ध में विकर्ण भीमसेन के हाथों मारा गया। विकर्ण एकमात्र कौरव था जिसके मारे जाने पर पाण्डव दुखी हुए थे।

(क्रमश:....., अगले माह)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

जीवन एक संसार

सही दिशा और सही
समय का ज्ञान न हो तो
उगता हुआ सूरज भी
डूबता हुआ
प्रतीत होता है..!!

दिमाग को ठंडा रखें तो
खुद को मजबूत पायेंगे
लोहा भी ठंडा रहने पर
मजबूत होता हैख गर्म होने
पर तो वह किसी भी आकार
में ढल जाता है.!!

भरोसा उसी पर करो जो
यह जान सके...
मुस्कुराहट के पीछे का गम
गुस्से के पीछे का प्यार
चुप रहने के पीछे की
वजह.!!

जो बुरे समय में
आपकी कमियां गिनाने
लग जाये उससे बड़ा
मतलबी इंसान कोई
नहीं है..!!

ह्रदय से अच्छे लोग
समझदार होने के बाद भी
धोखा खा जाते है, क्योंकि
वो दूसरों को भी ह्रदय से
अच्छे होने का विश्वास
कर बैठते है..!!

मतलब से जुडे रिश्ते,
मतलब पर आकर खत्म
हो जाते है, दिल से
जुडे रिश्ते आखिरी वक्त
तक साथ निभाते है..!!

लघुकथा-रिश्तों की डोर

आसमान में उड़ती रंग बिरंगी पतंगों ने विभा का ध्यानाकर्षण किया वह टकटकी लगाए उन्हें अपलक निहार रही थी। तभी **"ये कटी, ये कटी"** की आवाज ने उसकी तंद्रा भंग की यह आवाज मानों उसके कानों में शूल चुभा रही थी, उसकी आंखों के समक्ष जीवन की वास्तविकता का चित्रण उभर आया और आंखें सजल हो गई।

आसमान में ऊंची उड़ती पतंग सभी के आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी। वह पतंग चक्री से जुड़ी थी चक्री जिसने पकड़ी थी पतंग ने उसपर पूर्ण विश्वास रख स्वयं को समर्पित किया था। पतंग को भी अनेक झंझावतों से गुजरना पड़ता है, कभी ढील दी जाती है तो कभी डोर को कसकर खिंचा जाता है किन्तु वह सारी क्रियाओं को कुशलता पूर्वक संपन्न करने में सक्षम रहती है तभी तो जीत का ताज पहनने में कामयाब होती है।

काश! विभा ने भी अपने परिवार रूपी चक्री का साथ निभाया होता तो आज दशा और दिशा कुछ और ही होती किन्तु विपुल के उच्च पद पर आसीन होने से वह डोर से बँधे बिना ही उड़ना चाहती थी बिना बंधन के उड़ना कैसे संभव होता है वह उड़ान तो क्षणिक ही होती है और उसका अन्त और भी भयावह होता है। विभा की जिद के आगे विपुल की एक न चली और संयुक्त परिवार से अलग हो उसने अपना अलग आशियाना सँजो लिया किन्तु आंधी तूफान कब कहकर आते है।

रात में अचानक से विपुल के छाती में दर्द होने लगा। घबराहट के चलते विभा को फोन लगाने में भी हाथ कांप रहे थे, अब इस आलीशान कोठी में वह नितांत अकेली थी। आधा पौन घण्टा यूं ही असमंजस की स्थिति में बीत गया। परिवार साथ होता तो शायद समय पर कुछ उपचार संभव हो पाता किन्तु अब उसके पास सिवा पश्चाताप के कुछ शेष न रहा **आसमान में उड़ती पतंगों ने आज बिना कुछ कहे ही जीवन का पाठ पढ़ा दिया।**

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

मकर संक्रांती

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा, सच में बहुत अद्भुत अनोखा देश है हमारा, अनेक ऋतुएँ और मौसम व इनके अनुसार खानपान और ऋतु परिवर्तन के समय पर त्योहारों का आगमन सब कुछ अद्भुत!

यूँ तो सृष्टि के कण-कण में ईश्वर का वास है। लेकिन सूर्य और चन्द्रमा ईश्वर के दिव्यचक्षु सदृश है। जब-जब सूर्य की स्थिति में परिवर्तन होता है, हम प्रभावित होते हैं। ऐसा ही एक त्योहार हैं मकर संक्रांति, शीत ऋतु के पौष मास में जब भगवान सूर्य उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं यहाँ **"मकर" शब्द मकर राशि और संक्रांति अर्थात संक्रमण अर्थात प्रवेश करना एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने के स्थापन क्रिया को संक्रांति कहते हैं।**

पौराणिक कथा के अनुसार सूर्य अपने पुत्र शनि की नाराजगी भूलकर उससे मिलने जाते हैं, शनि मकर राशि के स्वामी है। ऐसा भी कहते हैं कि मकर संक्रांति के दिन भागीरथी के तपोबल पर भगवान विष्णु के अंगूठे से गंगा माता पृथ्वी पर प्रकट हुई।

प्राचीन उपनिषदों के अनुसार उत्तरायण का आरम्भ मुक्ति का मार्ग दिखाता है।
महाभारत में जब पितामह भीष्म बाणों की शय्या पर लेटे होते हैं, तो वह भी उत्तरायण शुरु होने पर ही अपना शरीर छोड़कर मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध से उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है, दिन धीरे-धीरे बड़े होने लगते हैं। रातें धीरे-धीरे छोटी होने लगती है।

"हिन्द देश के निवासी हम सभी जन एक हैं, रंग-रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं" - ये पंक्तियाँ हम भारतीयों के लिए कितनी सटीक है। मकर संक्रांति देश के सभी हिस्सों में मनाया जाता है, बस अलग-अलग नामों से। मकर संक्रांति का त्योहार हरियाणा और पंजाब में लोहड़ी के रूप में बिहार में मकर संक्रांति को खिचड़ी के रूप में, मकर संक्रांति पर खिचड़ी खाने के पीछे भी आरोग्य वृद्धि का कारण होता है। खिचड़ी में हल्दी व घी का सम्बन्ध गुरु और सूर्य से होता है। असम में माघ बिहू, मुगाली बहू के रूप में तमिलनाडु में पोंगल, केरल में मकर, विलक्कू और उत्तराखण्ड में घुघूती भी कहते हैं। गुजरात के अहमदाबाद शहर में पतंगबाजी का उत्सव दो दिन तक चलता है, अहमदाबाद में पंतग और मांझे (पतंग उड़ाने का धागा) का बाजार लगता है।

राजस्थान और मध्य प्रदेश में इस त्योहार को संक्रांति के रूप में मनाया जाता है। यहाँ पर मकर संक्रन्ति के दिन गेहूँ का खिचड़ा (पूरे गैहूँ को गलाकर विशेष रूप से बनाया गया) दूध और चीनी मिश्रित करके बनाया जाता है।

मकर संक्रांति के दिन दान करना शुभ माना जाता है। इस दिन गरीबों को अन्न-वस्त्र का दान और गाय माता को घास व गुड़ खिलाते हैं।

सुबह जल्दी उठकर नदी तालाब में स्नान करना या जल में तिल डालकर स्नान करने की भी मान्यता है। सुहागिने इस अवसर पर चौदह वस्तुएँ कलपती है और अपने से बड़ो को पाँव लगकर (प्रणाम करके) देती है। कहीं-कहीं सक्रांति की सुबह अलाव भी जलाया जाता है।

बच्चों में पतंगबाजी को लेकर गजब का उत्साह रहता है, कहीं-कहीं पुराना खेल गिल्ली-डंडा भी खेलते हैं। हमारे हर त्योहार के पीछे अच्छी भावना रहती है। हर त्योहार जीवन में उत्साह उमंग भर देता है।

लेकिन ये उत्साह कभी कभी दुखदाई भी होता है। मकर संक्रांति पर्व पर गगन में पतंगों का अम्बार लग जाता है। पतंग उड़ाने की शुरुआत कब और कैसे हुई इसके बारे में कोई लिखित रूप से कुछ स्पष्ट नहीं है, लेकिन भारत में यह पतंग उड़ाने की परम्परा बहुत पुरानी है, इस परम्परा ने आज प्रतिस्पर्धा का रूप ले लिया है। उड़ान भरना किसे अच्छा नहीं लगता, हवा के रूख के साथ हो या हवा के विपरीत हो डोर थामें उंगलियाँ हवा के रूख को देखकर पतंग से आकाश नापने की चाह किसे नहीं होती।

आसमान एक दिन हमारे लिए है, पर परिंदों की आवाजाही में कोई रुकावट न हो हमारे धागे से उन्हें चोट न पहुँचे, इसलिये हम चीन के मांझे का इस्तेमाल न करके अपने देश मे बनने वाले कपास के धागे, जिनको तेज बनाने के लिए किसी रासायनिक नहीं बल्कि गौंद चावल के आटे और अन्य सामग्री का उपयोग किया जाता है।

वैसे 2017 में चीनी मांझा जो कि रसायन और धातु के मिश्रण से ये ब्लेड जैसा धारदार होता है, ये टूटता नही है, स्ट्रेच होता है और तो और इलेक्ट्रिक कण्डक्टर होता है, जिससे इसमें करंट भी आ सकता है। इसे प्रतिबन्धित भी किया गया है, लेकिन हमारे देश मे अभी भी इसका उपयोग हो ही रहा है, इस धागे से पतंग उड़ाने वाले के हाथ कट जाते हैं और पक्षियों को भी चोट लग जाती है। राह चलते हुए किसी वाहन चलाने वाला इस धागे में उलझ जाए तो दुर्घटना हो सकती है। अगर चाइनीज मांझा ट्रेन के पेंटोग्राफ में उलझ जाए तो उसमें से चिंगारी निकलने लगती है।

पतंग पहले भी उड़ती थी, आसमां को छूती थी मगर परिन्दों की आवाजाही में कोई बाधा नही होती और कोई अप्रिय घटना नही घटती थी।

सरकार प्रतिबन्ध तो लगाती है पर हम मानते नहीं और इसका हर्जाना भी हमें ही भुगतना पड़ता है। क्यों हम अपने त्योहारों को पुराने तरीके से नही मनाते।

हम सब मिलकर इतना प्रयास करें कि गुड़ और तिल की मिठास का स्वाद और त्योहार का उल्लास बना रहे, बस! हम अपनी खुशी में औरों का भी ध्यान रखें त्योहार जीवन में प्रसन्नता का उजास भरते हैं न कि दुःखों का अँधेरा।

- संगीता दरक जी, मनासा (म. प्र.)

मकर संक्रांति- "सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करना (प्रवेश करना) संक्रांति कहलाता है"। जब सूर्य पौष माह से धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है तब मकर-संक्रांति होती है। संक्रांति के आते ही सूर्य उत्तरायण हो जाता है। माना जाता कि आज के दिन सूर्य देव अपने पुत्र शनि देव से मिलने जाते है। इस दिन ही गंगा की अमृत धारा धरा पर उतरी थी।

जाननें के लिए आइकन पर स्पर्श करें

पोंगल पर्व में मुख्यतः सूर्य भगवान की पूजा की जाती है। सुख संपत्ति समृद्धि का प्रतीक पोंगल का त्योहार दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में मनाया जाने वाला प्रमुख त्योहार है। इस त्योहार को 4 दिन तक अलग अलग तरह से मनाया जाता है। **पहले दिन को भोगी पोंगल, दूसरे दिन को सूर्य पोंगल, तीसरे दिन को मट्टू पोंगल और चौथे दिन को कन्नुम पोंगल कहा जाता है।**

जाननें के लिए आइकन पर स्पर्श करें

पारंपरिक व्यंजन

तिल केक

सामग्री - 1 -1/4 कप मैदा, 50 ग्राम भुने हुए तिल, 200 ग्राम मिल्कमेड, 100 ग्राम दूध, 90 ग्राम बटर, 2 टि-स्पून पिसी शक्कर, 1 टीस्पून बेकिंग सोडा, 1/2 टीस्पून कुकिंग सोडा, आधा टीस्पून वनीला एसेंस, आधा टीस्पून तिल एसेंस।

विधि - मैदा, बेकिंग पाउडर और बेकिंग सोडा मिलाकर तीन बार छान ले। एक बाउल में मिल्कमेड, मक्खन, पिसी चीनी और एसेंस मिलाकर अच्छे से फैट ले। उसके बाद उसमें छाना हुआ मैदा मिलाकर हल्के हाथों से मिक्स करें। जब वहां मिश्रण थोड़ा गाढ़ा हो तब उसने दूध डालकर, उस बैटर को थोड़ा पतला करें और बबल्स आने तक फैट ले। फिर उसमें थोड़ी तिल डाल कर अच्छे से मिलाएं। ग्रीस किये हुए केक टीन में यह मिश्रण डालें। ऊपर से बची हुई तिल स्प्रिंकल कर दे।
अब फ्री हिट ओवन में 180 डिग्री पर 35 मिनट के लिए यह केक बेक कर ले। आपका बढ़िया तिल केक बनकर तैयार है।

रसोई युक्तियाँ –

१) आपके पास जामन नहीं हो तो, दूध में चांदी का सिक्का डालने से दही जम जायेगा।
२) भटूरे के आटे में जल्दी खमीर उठाने के लिए आप गूंधते समय ब्रेड की २-३ स्लाईस मिलाइए।
३) अगर दूध खराब हो गया हो तो उसे छानकर उस पानी में चावल बनाइये, मुलायम और स्वादिष्ट बनेंगे। या फिर दूध में इलायची मिलाकर कलाकंद बनाइये।
४) डोसा कुरकुरा बनाने के लिए चावल भिगोते समय ५-६ मेथी के दाना और थोड़ी सी चना दाल डाले।

घरेलू नुस्खे -

१) यदि आपकी स्मरण शक्ति कमजोर है तो प्रतिदिन सुबह उठने के पश्चात मुंह धोकर मलाई और शहद का सेवन करें। २-३ महिने में ही लाभ होगा।
२) अगर आपको सर्दी हो गई हो तो सर्दी के दिनों में गुड और काले तिल खाने से जुकाम नहीं होगा।
३) मुंह में अगर दुर्गंध आ रही हो या छाले हो गए हो तो तुलसी के ३ पत्ते नित्य सुबह खाकर उस पर से पानी पिये।
४) अगर चेहरे पर बहुत ज्यादा झुर्रियां हो गई हो तो उसे हटाने के लिए ककड़ी और नींबू का रस बराबर मात्रा में लेकर चुटकी भर हल्दी मिलाकर लगाएं।

षटतिला एकादशी व्रत

हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार कृष्ण पक्ष एवं शुक्ल पक्ष दोनों पक्षों की एकादशी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एकादशी का व्रत एवं उपवास अनंत फलदायी होता है। एकादशी का व्रत करने वाले व्यक्ति को जीवन काल में अवश्य ही पुण्य मिलता है एवं मृत्यु उपरांत मोक्ष की प्राप्ति होती है।

माघ माह के कृष्ण पक्ष में पड़ने वाली एकादशी को षटतिला एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस उपवास को करने से जहां हमें शारीरिक पवित्रता और निरोगता प्राप्त होती है, वहीं अन्न, तिल आदि दान करने से धन-धान्य में बढ़ोत्तरी होती है। मनुष्य जो और जैसा दान करता है, शरीर त्यागने के बाद उसे फल भी वैसा ही प्राप्त होता है, अतः धार्मिक कृत्यों के साथ-साथ हमें दान आदि अवश्य करना चाहिए। शास्त्रों में वर्णित है कि बिना दान किए कोई भी धार्मिक कार्य सम्पन्न नहीं होता। षटतिला का अर्थ एवं महात्म्य जाने से पहले आइए इस एकादशी से जुड़ी हुई पौराणिक कथा को जानते हैं।

पौराणिक कथा इस प्रकार है –

भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से एकादशियों का माहात्म्य सुनकर श्रद्धापूर्वक उन्हें प्रणाम करते हुए अर्जुन बोले "हे केशव! पौष माह के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली एकादशी की कथा का वर्णन करें।"

अर्जुन की यह वचन सुनकर श्री कृष्ण अर्जुन से बोले "हे अर्जुन! आज मैं षटतिला एकादशी व्रत की कथा सुनाता हूँ।

एक बार दालभ्य ऋषि ने पुलस्त्य ऋषि से पूछा - हे ऋषिवर मनुष्य मृत्युलोक में रक्त बहाव आदि महापाप करते हैं और दूसरे के धन की चोरी तथा दूसरे की उन्नति देखकर ईर्ष्या आदि करते हैं, ऐसे महान पाप मनुष्य क्रोध, ईर्ष्या, आवेग और मूर्खतावश करते हैं और बाद में शोक करते हैं, ऐसे मनुष्यों को नरक से बचाने का क्या उपाय है जिससे ऐसे मनुष्यों को नरक से बचाया जा सके अर्थात उन्हें नरक की प्राप्ति न हो। ऐसा कौन-सा दान-पुण्य है, जिसके प्रभाव से नरक की यातना से बचा जा सकता है?

दालभ्य ऋषि की बात सुन पुलस्त्य ऋषि ने कहा - हे मुनि, जिस रहस्य को देवता भी नहीं जानते, वह मैं आपको अवश्य ही बताऊंगा। ऐसे मनुष्य को स्नान आदि से शुद्ध रहना चाहिए और इंद्रियों को वश में करके तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या तथा अहंकार आदि से सर्वथा बचना चाहिए एवं एकादशी के व्रत का पालन करना चाहिए।

एक बार नारद जी ने भी श्रीहरि से षटतिला एकादशी का महात्म्य पूछा, वे बोले- हे प्रभु! आप मेरा प्रणाम स्वीकार करें। षटतिला एकादशी के उपवास का क्या पुण्य है? उसकी क्या कथा है, कृपा कर मुझसे कहिए।

नारद जी की प्रार्थना सुन भगवान श्री हरि ने कहा - हे नारद! मैं तुम्हें प्रत्यक्ष देखा सत्य वृत्तांत सुनाता हूँ, कृपया ध्यानपूर्वक सुनिए।

बहुत पहले मृत्युलोक में एक ब्राह्मणी रहा करती थी। वह नित्य व्रत-उपवास किया करती थी। एक बार उसने एक मास तक उपवास किये थे, इससे उसका शरीर बहुत कमजोर हो गया। वह अत्यंत बुद्धिमान थी। फिर उसने कभी भी देवताओं तथा ब्राह्मणों के निमित्त अन्नादि का दान नहीं किया। मैंने चिंतन किया कि इस ब्राह्मणी ने उपवास आदि से अपना शरीर तो पवित्र कर लिया है जिससे इसको वैकुंठ लोक तो प्राप्त हो जाएगा, परन्तु कभी अन्न का दान नहीं किया है, और अन्न दान के बिना जीव की तृप्ति होना कठिन है।

ऐसा चिंतन कर मैं मृत्युलोक में गया और उस ब्राह्मणी से अन्न की भिक्षा मांगी। इस पर उस ब्राह्मणी ने कहा - हे योगीराज! आप यहां किसलिए पधारे हैं? मैंने उनसे कहा - मुझे भिक्षा का दान चाहिए। इस पर उसने मुझे एक मिट्टी का पिंड दान में दे दिया। मैं उस पिंड को लेकर स्वर्ग वापस लौट आया। कुछ समय व्यतीत होने पर ब्राह्मणी शरीर त्याग कर स्वर्ग में आई। मिट्टी के पिंड दान के प्रभाव से उसको स्वर्ग में एक आम वृक्ष सहित घर मिला, परन्तु उस घर में अन्य वस्तुओं नहीं मिली।

वह घबराते हुए मेरे पास आई और बोली - हे प्रभु! मैंने अनेक व्रत-उपवास आदि से आपका नित्य पूजन किया है, किंतु फिर भी यहां घर में वस्तुओं नहीं है सब रिक्त है, इसका क्या कारण हो सकता है?
मैंने उनसे कहा - तुम अपने घर जाओ और जब देव-स्त्रियां तुम्हें देखने आए तब उनसे षटतिला एकादशी व्रत का माहात्म्य और उसका विधान पूछना। जब तक वह यह न बताए तब तक द्वार मत खोलना।

प्रभु के कहे अनुसार वह अपने घर गई और जब देव-स्त्रियां उससे मिलने आईं तो द्वार खोलने के लिए कहा। तब उस ब्राह्मणी ने श्री हरि के वचनानुसार उनसे कहा - यदि आप मुझे देखने आई हैं तो पहले आप मुझे षटतिला एकादशी का महात्म्य बताए तभी आपसे मिलूंगी। तब उनमें से एक देव-स्त्री ने कहा- यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो ध्यानपूर्वक श्रवण करो, मैं तुमसे एकादशी व्रत और उसका माहात्म्य विधान सहित कहती हूं। जब उस देव-स्त्री ने षटतिला एकादशी का माहात्म्य सुना दिया, तब उस ब्राह्मणी ने द्वार खोल दिया। देव-स्त्रियों ने ब्राह्मणी को सब स्त्रियों से अलग पाया।

उस ब्राह्मणी ने भी देव-स्त्रियों के कहे अनुसार षटतिला एकादशी का उपवास किया और उसके प्रभाव से उसका घर धन्य-धान्य से भर गया, अतः मनुष्यों को अज्ञान को त्यागकर षटतिला एकादशी का उपवास करना चाहिए। इस एकादशी व्रत के करने से व्रती को जन्म-जन्म की निरोगता प्राप्त होती है और सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

- पुष्य नक्षत्र में गोबर, कपास, तिल मिलाकर उपले बनाने चाहिए। यथासंभव इन उपलों से 108 बार हवन करना चाहिए।

- जिस दिन मूल नक्षत्र और एकादशी तिथि हो उस दिन अच्छे पुण्य देने वाले नियमों को ग्रहण करना चाहिए। स्नानादि नित्य कर्म करके भगवान श्रीहरि का पूजन व कीर्तन करना चाहिए।

- एकादशी के दिन उपवास करें तथा रात को जागरण और हवन करें।

- उसके दूसरे दिन धूप, दीप, नैवेद्य से भगवान श्रीहरि की पूजा-अर्चना करें तथा खिचड़ी का भोग लगाए। उस दिन श्री विष्णु को पेठा, नारियल, सीताफल या सुपारी सहित अर्घ्य अवश्य देना चाहिए, तदुपरांत उनकी स्तुति करनी चाहिए - हे जगदीश्वर! आप निराश्रितों के शरणार्थी हैं। आप संसार में डूबे हुए के तारक है, हम सभी का उद्धार करने वाले हैं। हे कमलनयन! हे जगन्नाथ! हे पुण्डरीकाक्ष! हे मधुसूदन! आप लक्ष्मीजी सहित मेरे इस तुच्छ अर्घ्य को स्वीकार कीजिए।

- इसके पश्चात जल से भरा घड़ा और तिल दान करने चाहिए। मनुष्य जितने तिलों का दान करता है वह उतने ही सहस्र वर्ष स्वर्ग में वास करता है।

षटतिला का अर्थ क्या है ?
जैसा कि षटतिला नाम के अनुसार स्पष्ट होता है कि इस एकादशी में छः प्रकार से तिल का उपयोग किया जाता है।

"तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिल दाता च भोक्ता च षटतिला पापनाशिनी।"

श्लोक के अनुसार तिल का उपयोग स्नान करने, हवन करने, उबटन करने, तिल मिश्रित जल को पीने तिल का दान करने एवं भोजन में तिल का उपयोग करने से समस्त पापों का नाश होता है।
इस तरह 6 प्रकार से तिल का उपयोग अनंत फल देता हैं, भगवान विष्णु की आराधना के लिए विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करने से सुख समृद्धि में वृद्धि होती है।

- रूचि गोस्वामी जी, बीकानेर (राज.)

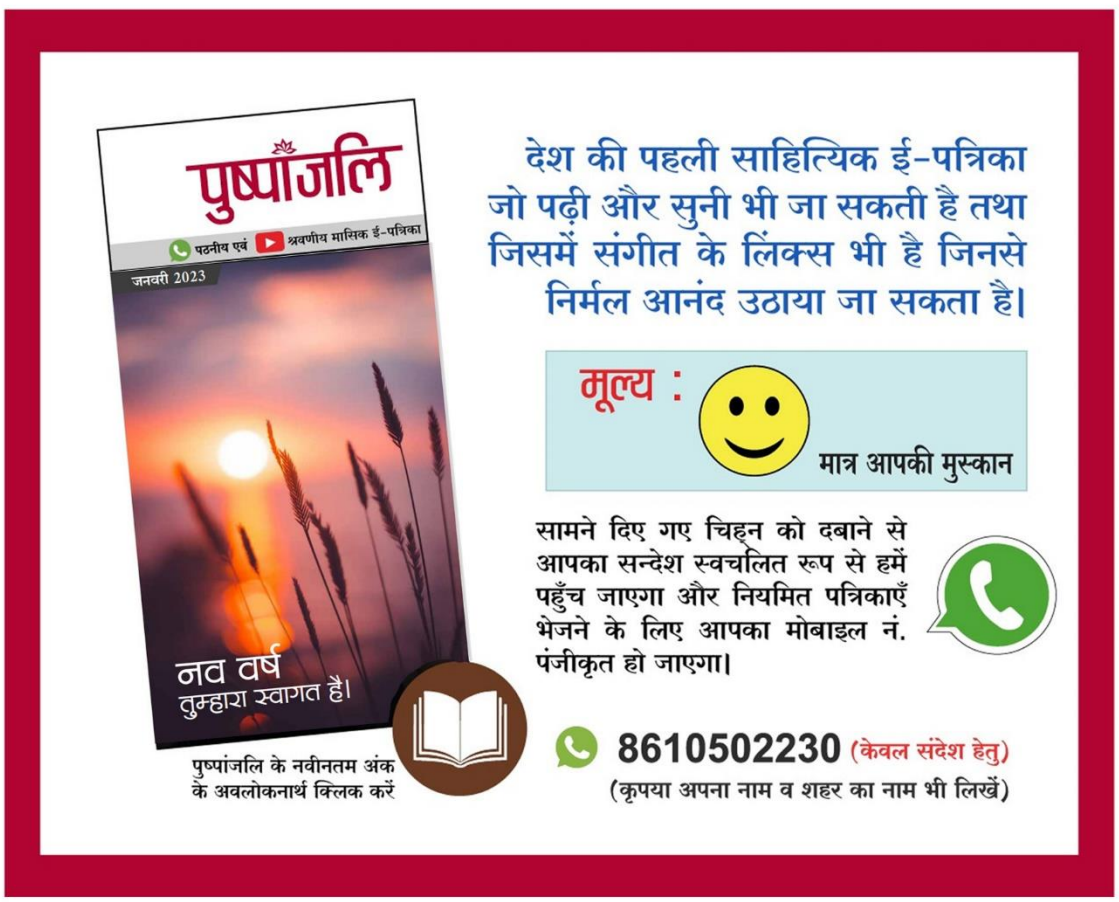

हंसी-खुशी के पल

अपने बच्चों को चाचा, मामा, ताउ बोलना सिखाएं अंकल तो चिप्स के रूप में दुकानों पर लटके मिलते है....!

मरीज - डॉक्टर साहब मेरे जोडों में बहुत दर्द रहता है, क्या करूं...?
डॉक्टर - जोडे तो भगवान बनाते है, इसमें मैं क्या कर सकता हूं....!

चाय पीने के दो नियम
पहली बार ऐसे पीयो कि दुबारा मिलेगी ही नहीं..

दूसरी बार ऐसे पीयो कि जैसे पहले कभी पी ही नहीं हो...!

गणित के सर - अगर १००० किलो = एक टन होता है तो, ३००० टन का कितना होगा??

पप्पू - टन टन टन...!

गणित में मैं इसलिए अच्छे नंबर नहीं ला पाता था क्योंकि त्रिभुज को देखकर समोसे की याद आ जाती थी...!

टीचर - नेता जी, आपका बेटा फेल हो गया है और आप लड्डू खिला रहे है??
नेता जी - ६० लडकों की कक्षा में ४० फेल हो गये तो बहुमत तो मेरे बेटे के साथ है...!

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी 1950 ये वही स्वर्णिम दिवस है जिस दिन भारत सरकार अधिनियम (1935) को हटाकर भारत का संविधान लागू हुआ था। इस दिन को हर साल गणतंत्र दिवस के रूप में भारत के हर छोटे बड़े शहरों, गांवों एवं कस्बों में मनाया जाता है। 26 नवंबर 1949 को एक स्वतंत्र गणराज्य एवं भारतीय संविधान के अनुसार देश में कानून स्थापित करने के लिए भारतीय संविधान सभा द्वारा इसे अपनाया गया था।

संविधान के मुताबिक, देश के संवैधानिक प्रमुख राष्ट्रपति होते हैं। इसलिए 26 जनवरी को राष्ट्रपति दिल्ली के राजपथ पर तिरंगा फहराते हैं और देश के नाम अपना संदेश जारी करते हैं। इस दिन तिरंगा ऊपर ही बँधा होता है, उसे पूरा खोल कर फहराया जाता है उसे झंडा फहराना कहते हैं। संविधान लागू होते ही भारत एक सर्वप्रधान राष्ट्र बन गया मतलब जो किसी बाहरी देश के फ़ैसलों एवं आदेशों को मानने के लिए बाध्य नहीं और भारत की निजी मामलों में भी कोई अन्य देश दखल नहीं दे सकता। इसलिए यह दिन गणतंत्र दिवस के नाम से भी मनाया जाता है।

दिसंबर 1929 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक बैठक का आयोजन किया जिसमें इस बात का ऐलान किया गया की 26 जनवरी 1930 तक अंग्रेज़ी सरकार, भारत को स्वायत्त उपनिवेश या डोमिनियन (Dominions - ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन जो अर्ध स्वतंत्र सत्ताएँ थी उन्हें डोमिनियन कहाँ जाता था) का दर्जा दे। उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की गई और भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की तरफ़ अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया गया। उस दिन से 15 अगस्त 1947 में वास्तविक स्वतंत्रता मिलने से पहले 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता था।

स्वतंत्रता मिलने के उपरांत संविधान सभा की घोषणा हुई। इस सभा के सभी सदस्य भारतीय राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे। उन्होंने अपना कार्य 9 दिसंबर 1947 से शुरू कर दिया था। डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल एवं मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इत्यादि इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। पूरे 2 साल 11 महीने 18 दिन में भारतीय संविधान का निर्माण किया गया। डॉक्टर बाबा साहेब अंबेडकर ने 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा के अध्यक्ष डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद को भारत का संविधान सुपुर्द किया इसलिए 26 नवंबर यह दिन संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हर वर्ष 26 जनवरी, गणतंत्र दिवस के रूप में पुरे भारत में हर छोटी- बड़ी जगह हम मनाया जाता है। परंतु विशेष रूप से **भारत की राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह से मनाया जाता है। इस दिन राजपथ पर यानी इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन तक एक भव्य परेड का आयोजन किया जाता है।**

इस परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजीमेंट, वायुसेना, नौसेना सभी भाग लेते हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC), विभिन्न राज्यों के लोगों की विशेषता एवं उनके लोकगीत एवं कला का दृश्य चित्र प्रस्तुत किया जाता है। अलग अलग विद्यालयों के बच्चे भी इस परेड में शामिल होकर गौरवान्वित होते हैं। परेड के आरंभ में प्रधानमंत्री इंडिया गेट पर स्थित अमर जवान ज्योति पर पुष्प माला अर्पित कर उनके स्मृति में 2 मिनट का मौन रखते हैं फिर अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं।
इस तरह से प्रति वर्ष भारत में 26 जनवरी का पर्व मनाया जाता है।

- योगिता सदानी जी, पुणे (महाराष्ट्र)

देखो आया बसंत!

आई झूम के बहार, चली शीतल बयार।
खिली मन में उमंग, देखो आया बसंत!

सातों सूरज के घोड़े, उत्तरायण को दौड़े।
उतरा शीत का घमंड, देखो आया बसंत!

तिल गुड़ की मिठास, चाहे दूर हों या पास।
रंगें अपनों के रंग, देखो आया बसंत!

बसंत पंचमी का पूजन, माँ सरस्वती का वंदन।
पीले चावल की सुगंध, देखो आया बसंत!

खिले सरसों की बाली, झूमे फूलों की डाली।
खड़ी फसलें दबंग, देखो आया बसंत!

बाँधे मन से मन की डोर, पतंगें नभ में चारों ओर।
उड़ती चलें हवा के संग, देखो आया बसंत!

नाचे मन का मयूर, रहना चाहे न ये दूर।
भर लो बाहों में अब कंत, देखो आया बसंत!

जैसे धूप खिली है नभ में,
वैसे ख़ुशियाँ फैले जग में। होगा सभी दुखों का अंत,
देखो आया बसंत! सखी आया बसंत!

- स्वीटी सिंघल जी 'सखी', बैंगलोर (कर्नाटक)

अभी कहां तुम हारे जीवन से

बस एक बाज़ी ही तुम हारे हो -
अभी कहां तुम हारे जीवन से?

सांझ अगर हुई तो
सवेरा भी -
कल होगा।
प्रमेय जो कठिन
वह कभी तो -
हल होगा।

बस एक तारा ही तो टूटा है -
ब्रह्मांड कहां टूटा गगन से?

नैया, बीच भंवर
कभी तो -
पार होगी।
कोशिश करें मकड़ी
कभी न -
हार होगी।

बस एक घुंघरू ही तो टूटा है -
अभी कहां तुम हारे नर्तन से?

सुराख़ आसमान में
वो -
कर पाता है।
पत्थर उछालना
जिसे यहां -
आता है।

बस एक जुआ ही तुम हारे हो -
अभी कहां हारे दुर्योधन से?

- अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (म.प्र.)

बीते तीन साल बहुत कुछ सीखा गया

वैसे तो बीते वर्ष 2020 से 2022 तक हमने मानसिक तनाव बहुत झेला है। यह मानसिक कष्ट अनेक कारणों से रहा, जिसमें प्रमुख रहा चीन पाकिस्तान के साथ युद्ध का भय व कोरोना महामारी व महामारी के बाद वाले प्रभाव। परन्तु हम सभी यह भी जानते हैं कि हमारी सरकार ने चीन व पाकिस्तान दोनों पर अपना दबदबा बनाये रखा और कोरोना महामारी पर बहुत हद तक काबू भी पाने में सफल रही। यही सभी कारण रहे हैं जिसके चलते बीते तीन साल हमें बहुत कुछ सिखा के भी गये हैं और उस शिक्षा ने हमारी सोच व कार्य पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है। यही कारण है जब इन दिनों वापस फिर कोरोना की आहट सुनने में आ रही है तब हम सब भी इस बार उसको हावी नहीं होने देने के प्रति न केवल जागरूक हैं बल्कि प्रतिबद्ध भी हैं। इसी कारण, हम सभी इस बार **"मास्क और दो गज की दूरी...जान बचाने के लिये फिर जरूरी"** अपनाना शुरू कर दिया है।

अब बीते इन तीनों साल में हमने जो कुछ भी सीखा उसी को क्रमवार प्रस्तुत कर रहा हूँ-

1] कोरोना काल वाले समय से आज तक हमने अपने **सीमित संसाधनों** में भी कैसे जी सकते हैं, सिखा।

2] कोरोना काल वाले समय में हमने घर की चारदीवारी में रहने के लिए आवश्यक **संयम का महत्व** सीखा जिसका लाभ अनेक लोग अब उठा रहे हैं अर्थात खासकर वे, जिनके बच्चे उनसे दूर रहते हैं।

3] बीते सालों में हमने हर तरह की **समस्या से संघर्ष** करना भी सीखा है।

4] इसी तरह इन सालों में हमने **स्वयं का काम स्वयं** करना चाहिये, के महत्व को समझा।

5] सच में देखा जाए तो देश में हमारे **आस-पास स्वच्छता-सफाई**, जिसका सरकार पीछे कई वर्षों से अभियान चलाए हुए थी उसका सही अर्थों में महत्व इन बीते सालों में हमें बखूबी समझ में आ गया।

6] आजकल **समय बैंक** का चलन है। उसकी उपयोगिता समझ, उसमें अनेक लोगों ने इन दिनों में अपनी अपनी सहभागिता सुनिश्चित की है।

7] हालाँकि **एक दूसरे की मदद** करना हमें बचपन से सिखाया जाता रहा है, लेकिन इसका महत्व भी बहुत ही बढ़िया ढंग से हमें इन बीते सालों में सीखने को मिला है।

8] **मानसिक संतुलन** की आवश्यकता क्यों और इसे कैसे बनाये रखना है इसको भी हमने अच्छी तरह से सीखा है।

9] **अन्न की कीमत** क्या होती है इसका अनुभव भी हर स्तर के लोग इन बीते सालों में न केवल देखा बल्कि समझा भी है।

10] वैसे तो हम सभी जानते ही हैं कि सावधानी रखना कितनी जरूरी है लेकिन **"सावधानी हटी और दुर्घटना घटी"** का महत्व इन बीते सालों में बखूबी मालूम पड़ा है।

11] इन्हीं सालों में हमने यह भी सीखा है कि **घर के काम में सभी हाथ बंटाते** हैं तो कितनी आसानी से सारे गृहकार्य निपट जाते हैं यानि बीते तीन साल घर के काम में हाथ बंटाना भी सीखा गये।

12] **प्रकृति को सहेजना** चाहिये, यह तो सभी जानते हैं लेकिन उसके प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव भी इन्हीं बीते सालों में हुआ है।

13] बीते सालों में **अमीरी-गरीबी का भेद** जिस तरह से मिटा है यानी प्रकृति ने किसी से भेदभाव नहीं किया, वह भी एक अलग तरह का अनुभव हुआ है।

14] बीते सालों में हमने यह भी अनुभव किया कि सीमित लोगों के साथ कम खर्च में शादी सम्पन्न की जा सकती है अर्थात **मितव्ययिता का महत्व** भी समझने में आया।

15] इसी तरह बीते सालों में हमने यह जान लिया कि कम लोगों की उपस्थिति में भी अंतिम संस्कार करना उचित रहता है। वही **जीवन का सही मूल्य** समझा कर विदा हुए हैं।

16] किसी भी बीमारी से पार पाने में मानसिकता का अलग महत्व है। यही बात यानि आने वाली किसी भी तरह की विपदा को मजबूती से निपटने की **मानसिक तैयारी** कैसी हो यह हमें बीते सालों में सीखने मिला है।

17] हम सभी प्रायः नित्य ही अपने अपने पूजा स्थल जाते ही रहे हैं। लेकिन किसी कारणवश नहीं जा पाने पर जो मन में ग्लानि वाला भाव हो जाता उस पर, सर्वशक्तिमान प्रभु ने, पार पाना सीखा दिया अर्थात उस **परिस्थिति में घर पर ही दर्शन**, अर्चना वाला महत्व कम नहीं है, समझा दिया।

18] जो लोग समय अभाव के कारण हो या अन्य कारणवश पूजा अर्चना को महत्व नहीं देते थे, उन्हें **आध्यात्मिक चिंतन** महत्वपूर्ण क्यों, इन्हीं बीते सालों में देखने मिला।

19] इन्हीं बीते सालों में हमको **ऑनलाइन पढ़ाई** का महत्व अच्छी तरह समझ में आ गया अर्थात **समय, मेहनत व पैसा** सभी में किफायत जानने मिली।

20] हम डिजिटल युग में रह रहे हैं लेकिन उसका सदुपयोग कर हम क्या क्या लाभ उठा सकते हैं, इस विषय को कोरोना काल वाले समय से अभी तक निरन्तर विस्तार से समझाया जा रहा है। यही कारण है कि लोगों का रुझान **डिजिटल सदुपयोग** की तरफ बढ़ता ही जा रहा है।

- गोवर्धन बिन्नानी जी "राजा बाबू", बीकानेर (राज.)

रामायण प्रश्नोत्तरी

1. श्रीराम की सेना के दो अभियंता वानर के नाम बताइए?
(क) अंगद-हनुमान
(ख) सुग्रीव-अंगद
(ग) केसरी-सुषेण
(घ) नल-नील

2. जिस विमान पर बैठकर श्रीराम लक्ष्मण-सीता सहित लंका से अयोध्या आए थे, उसका क्या नाम था?
(क) गरुड़
(ख) पुष्पक
(ग) सौभ
(घ) नीलकुंज

3. लंका के उस प्रसिद्ध वैद्य का क्या नाम था, जिसे लक्ष्मण की मूर्छा दूर करने के लिए हनुमान जी लंका से क्या उठा लाए थे?
(क) मातलि
(ख) विश्रवा
(ग) सुषेण
(घ) रैभ्य

4. लक्ष्मण की मूर्छा दूर करने हेतु हनुमानजी जो औषधि लेकर आए थे, उसका क्या नाम था?
(क) प्राणदायिनी बूटी
(ख) संजीवनी बूटी
(ग) अमृतांजनी
(घ) योगिनी

5. राजा जनक का मूल नाम क्या था?
(क) सीरध्वज
(ख) शतध्वज
(ग) कपिध्वज
(घ) मकरध्वज

6. कैकेयी की उस दासी का क्या नाम था जिसने कैकेयी को राम को वनवास और भरत को राजगद्दी माँगने के लिए बहकाया था?
(क) देविका
(ख) सुजाता
(ग) मंथरा
(घ) सुहासिनी

7. वाल्मीकि रामायण की रचना जिस छंद में हुई है उसका क्या नाम है?
(क) चौपाई
(ख) सोरठा
(ग) सवैया
(घ) अनुष्टुप्

8. उस गुप्तचर का क्या नाम था जिस के कहने पर श्रीराम ने सीता जी का परित्याग कर दिया था?
(क) सुमालि
(ख) मणिभान
(ग) दुर्मुख
(घ) छदक

9. कैकेयी का उस दासी का क्या नाम था जो मायके से ही उसके साथ आई थी?
(क) सुभदा
(ख) मंथरा
(ग) रेवती
(घ) नलिनी

10. उस तीर्थ का क्या नाम था जिसमे डुबकी लगाकर श्रीराम ने परमधाम को प्रस्थान क्या था?
(क) समंतपंचक
(ख) गोमंतक
(ग) गोप्रतार
(घ) नारदकुंड

उपरोक्त पूछे गए सवालों के जवाब आप हमे मैसेज, मेल, व्हाट्सअप, टेलीग्राम और फेसबुक पर भेज सकते है।

सही जवाब देने वाले पहले 10 सदस्यों का नाम आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

राजस्थानी भाषा में बनी पत्रिका "राजस्थानी वाणी" को पढ़ने के लिए टेलीग्राम के आइकॉन पर क्लिक करें।

आत्मा के काया-शरीर के नाम (प्रकार)

1. **कारजीक काया** - मृत्यु लोक में मलमुत्र का शरीर होता है। इसे कारजिक काया कहते है। यह वहां सब कार्य कर सकती है।

2. **जाँचनिक काया** - मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा फल यमलोक में मिलता है। (जाँच करके) अतः वहां इसे जाँचनिक काया कहते है।

3. **कारणिक काया** - सुरलोक में कारणिक काया तेजपूंज की काया होती है।

4. **महाकारण काया** - ब्रह्मलोक में महा कारण, सुक्ष्म ब्रह्म सम, आत्मा पहले भी ब्रह्म थी और वापस ब्रह्म हो गई। यहाँ से वापस आना जाना जारी रहता है।

5. **दिव्य काया** - संत काया ये पंच काया, चारूं सो माया। इसी काया से मोक्ष मिलता है। सुखदेव पंचमी सतस्वरूप भाया –

जब संत काया दिव्य रूप धारे।
कह सुखदेव संत मोक्ष पधारे ।।

मनुष्य शरीर ही बोलता है बाकी कोई नहीं बोलते क्यों?

क्योंकि मनुष्य शरीर में ही कागल्या रूपी शिव विस्थापित है, इसी के द्वारा हम बोलते है। इसी से हम भक्ति का बीज ला सकते है। अगर कागल्या चिपका है तो लोग गुंगे होते है, कम चिपका हुआ है तो लोग तोतले बोलते है और सही हो तो भलीभांति बोल सकते है। जब बोल सकते है तो प्रभु का नाम भी ले सकते है जैसे शिवलिंग पर जल चढ़ते है उसी तरह राम-राम का विधि से जाप करना ही शिवलिंग पर जल चढाने समान है।

- संत शिष्य जगदीश प्रसाद जागेटिया जी, ब्यावर (राज.)

भारतीय परम्परा

नव वर्ष
की शुभकामना

2023

www.bhartiyaparampara.com